नालंदा : भारत की ज्ञान परंपरा और बौद्धिक विरासत

मुकुन्द कुमार

सहायक प्राध्यापक, इतिहास विभाग, टी० पी० एस० कॉलेज, पटना, बिहार

शोध सार

नालंदा महाविहार भारतीय ज्ञान-परंपरा, बौद्धिक स्वतंत्रता और वैश्विक शैक्षिक आदान-प्रदान का एक अद्वितीय प्रतीक रहा है। पाँचवीं शताब्दी ईस्वी में स्थापित यह संस्थान केवल बौद्ध अध्ययन का केंद्र नहीं था, बल्कि दर्शन, तर्कशास्त्र, व्याकरण, चिकित्सा, गणित, खगोल विज्ञान तथा अन्य विविध विषयों के अध्ययन और अनुसंधान का अंतरराष्ट्रीय विश्वविद्यालय था। यह लेख नालंदा को केवल एक ऐतिहासिक विश्वविद्यालय के रूप में नहीं, बल्कि एक जीवंत बौद्धिक परंपरा और सभ्यतागत दृष्टि के रूप में समझने का प्रयास करता है। इसमें नालंदा की स्थापना, विकास, पाठ्यक्रम की बहुआयामी संरचना, विमर्श और शास्त्रार्थ की संस्कृति, धर्मगंज पुस्तकालय की भूमिका तथा उसके वैश्विक प्रभाव का विश्लेषण किया गया है। लेख यह भी स्पष्ट करता है कि नालंदा का पतन केवल बाहरी आक्रमण का परिणाम नहीं था, बल्कि राजनीतिक, सामाजिक और सांस्कृतिक परिवर्तनों के संयुक्त प्रभावों से जुड़ा हुआ था। साथ ही, तिब्बत, चीन, कोरिया और जापान सहित एशिया के विभिन्न क्षेत्रों में नालंदा की बौद्धिक विरासत के प्रसार तथा आधुनिक नालंदा विश्वविद्यालय के पुनरुत्थान की भी चर्चा की गई है। नालंदा का अनुभव यह सिद्ध करता है कि किसी भी सभ्यता की स्थायी शक्ति उसके ज्ञान-संस्थानों और बौद्धिक मूल्यों में निहित होती है।

कुंजी शब्द : नालंदा महाविहार, भारतीय ज्ञान-परंपरा, बौद्धिक विरासत,वैश्विक ज्ञान-विनिमय, बौद्धिक स्वतंत्रता

Recived : 12/5/2026 https://doi.org/10.5281/zenodo.21341447 Aceptance: 30/5/2026

प्रस्तावना:

भारत को प्राचीन काल से ही 'विश्वगुरु' की उपाधि से सम्मानित किया जाता रहा है। यह सम्मान केवल उसकी सैन्य या आर्थिक शक्ति के कारण नहीं, बल्कि ज्ञान, दर्शन और विज्ञान के क्षेत्र में उसकी अद्वितीय उपलब्धियों के कारण प्राप्त हुआ था। भारतीय ज्ञान-परंपरा में शिक्षा को मात्र जीविकोपार्जन का साधन नहीं माना गया, बल्कि उसे आत्म-साक्षात्कार और मुक्ति का मार्ग "सा विद्या या विमुक्तये" समझा गया। वेदों, उपनिषदों और गुरुकुलों से प्रारम्भ हुई यह ज्ञान-यात्र जब संस्थागत स्वरूप में विकसित हुई, तब उसने विश्व के कुछ सबसे प्राचीन और महान विश्वविद्यालयों को जन्म दिया। इसी गौरवशाली परंपरा का सर्वोच्च शिखर था -नालंदा महाविहार (विश्वविद्यालय)।

वर्तमान बिहार में राजगीर के निकट स्थित नालंदा केवल एक शैक्षणिक संस्थान नहीं था, बल्कि कई शताब्दियों तक वैश्विक ज्ञान, सांस्कृतिक आदान-प्रदान और आध्यात्मिक चेतना का प्रमुख केंद्र बना रहा। आज नालंदा के खंडहरों में घूमते हुए अधिकांश लोग लाल ईंटों के अवशेष, आंशिक रूप से उत्खनित स्तूपों और जर्जर दीवारों को देखते हैं। कुछ लोग वहाँ प्राचीन विश्वविद्यालय की भव्यता की कल्पना करते हैं, तो कुछ उसके विनाश की कथा सुनाने को उत्सुक दिखाई देते हैं। किंतु क्या नालंदा का यह भग्नावशेष केवल इतना ही है 'एक जला हुआ पुस्तकालय, एक ध्वस्त मठ और एक समाप्त हो चुका विश्वविद्यालय? (चतुर्वेदी, 2025)

वास्तव में, नालंदा की कहानी केवल उसकी स्थापना या उसके विनाश तक सीमित नहीं है। इन घटनाओं से कहीं अधिक महत्वपूर्ण है वह अदृश्य नालंदा, जो ईंटों और पत्थरों में नहीं, बल्कि हमारी बौद्धिक चेतना और सोचने के ढंग में

विद्यमान है। यह लेख नालंदा को केवल एक ऐतिहासिक विश्वविद्यालय के रूप में नहीं, बल्कि एक बौद्धिक आदर्श और सभ्यतागत दृष्टि के रूप में पुनर्पाठ करने का प्रयास है। यह उस मूलभूत प्रश्न की खोज भी है, जो आज उतना ही प्रासंगिक है जितना सदियों पहले था- क्या कोई सभ्यता वास्तव में ज्ञान को सत्ता, धर्म और व्यावसायिक हितों से ऊपर रख सकती है? और यदि वह ऐसा करना भूल जाती है, तो उसके खंडहर केवल ईंटों और भवनों के नहीं होते वे उसकी आत्मा, उसकी स्मृति और उसकी बौद्धिक विरासत के भी होते हैं। (मिलर, 2019)

ज्ञान का उदयः नालंदा की स्थापना और संरक्षण

नालंदा महाविहार की स्थापना पाँचवीं शताब्दी ईस्वी (लगभग 427 ईस्वी) में गुप्त साम्राज्य के शक्तिशाली शासक सम्राट कुमारगुप्त प्रथम के शासनकाल में हुई मानी जाती है। गुप्त युग को भारतीय इतिहास का 'स्वर्ण युग' कहा जाता है, क्योंकि इस काल में साहित्य, कला, विज्ञान, दर्शन और शिक्षा के क्षेत्र में उल्लेखनीय प्रगति हुई। नालंदा इसी गौरवशाली युग की सबसे मूल्यवान बौद्धिक उपलब्धियों में से एक था। अपने प्रारंभिक चरण में नालंदा एक साधारण बौद्ध विहार के रूप में विकसित हुआ, किंतु समय के साथ यह विश्वविख्यात शिक्षा-केंद्र बन गया। गुप्त शासकों के पश्चात् सम्राट हर्षवर्धन (7वीं शताब्दी) तथा बंगाल के पाल शासकों (8वीं से 12वीं शताब्दी) ने इसे उदार संरक्षण प्रदान किया। इन शासकों ने नालंदा के रख रखाव, शिक्षण व्यवस्था और छात्र-कल्याण के लिए अनेक गाँवों का राजस्व दान स्वरूप समर्पित किया, जिससे यह संस्थान आर्थिक रूप से सुदृढ बना रहा।

लगभग आठ शताब्दियों तक नालंदा ज्ञान, अनुसंधान और बौद्धिक विमर्श का एक प्रमुख केंद्र बना रहा। यह केवल भारत का ही नहीं, बल्कि सम्पूर्ण एशिया का एक प्रतिष्ठित विश्वविद्यालय था, जहाँ विभिन्न देशों के विद्यार्थी और विद्वान अध्ययन एवं शोध के लिए आते थे। अपने दीर्घकालीन योगदान के माध्यम से नालंदा ने एशिया के बौद्धिक, सांस्कृतिक और आध्यात्मिक विकास को गहराई से प्रभावित किया तथा ज्ञान के वैश्विक आदान-प्रदान की एक सशक्त परंपरा स्थापित की।

नालंदा महाविहार के प्राचीन खंडहर Source:Inditalè

सारिपुत्र से नालंदा तकः

नालंदा की कहानी केवल किसी शासक द्वारा स्थापित एक शैक्षणिक संस्थान की कथा नहीं है, बल्कि उसकी जड़ें उस महान बौद्धिक परंपरा में निहित हैं जिसका प्रतिनिधित्व भगवान बुद्ध के प्रमुख शिष्य सारिपुत्र करते हैं। बौद्ध परंपरा के अनुसार सारिपुत्र का जन्म नालंदा के निकट एक ब्राह्मण परिवार में हुआ था (स्रोत रूलायन्स रोअर, 2019)। तिब्बती इतिहासकार तारानाथ भी नालंदा को उनकी जन्मस्थली मानते हैं। उनकी माता का नाम 'सारि' था, जिसके कारण वे 'सारिपुत्र' कहलाए। बौद्ध साहित्य में उन्हें 'प्रज्ञा में सर्वोच्च' अर्थात् ज्ञान और विवेक के क्षेत्र में सर्वश्रेष्ठ शिष्य के रूप में प्रतिष्ठित किया गया है।

सारिपुत्र का महत्व केवल एक धार्मिक व्यक्तित्व के रूप में नहीं, बल्कि एक महान चिंतक और तर्कशील दार्शनिक के रूप में भी है। उन्होंने बौद्ध धर्म को केवल श्रद्धा और आस्था तक सीमित न रखकर उसे बौद्धिक विमर्श और तार्किक विश्लेषण की दिशा प्रदान की। उनके लिए सत्य का आधार अंधविश्वास नहीं, बल्कि अनुभव, तर्क और समझ था। संभवतः यही वह बौद्धिक दृष्टि थी, जिसने आगे चलकर नालंदा की आत्मा को आकार दिया-एक ऐसी परंपरा, जहाँ 'मानने' से अधिक 'समझने' को महत्व दिया जाता था। मौर्य सम्राट अशोक ने तीसरी शताब्दी ईसा पूर्व में सारिपुत्र की स्मृति में एक स्तूप का निर्माण करवाया था, जो बाद में नालंदा महाविहार के प्रमुख स्मारकों में सम्मिलित हुआ (स्रोत : शांडगंगा, 2023)।

पाँचवीं शताब्दी ईस्वी (लगभग 427 ईस्वी) में गुप्त सम्राट कुमार गुप्त प्रथम के संरक्षण में नालंदा महाविहार ने एक संगठित शैक्षणिक संस्थान का रूप ग्रहण किया। प्रोफेसर समद्दार तथा रेवरेंड एच. हेरास सहित अनेक विद्वानों ने इसकी स्थापना का काल लगभग 427 ईस्वी माना है (स्रोत : ओझा, 2023)। आरंभ में यह बौद्ध अध्ययन का प्रमुख केंद्र था, किंतु समय के साथ यह बहुविषयक ज्ञान-संस्थान के रूप में विकसित हो गया। यहाँ बौद्ध दर्शन के साथ-साथ व्याकरण, तर्कशास्त्र, चिकित्सा विज्ञान, गणित, खगोलशास्त्र, भाषाशास्त्र तथा विभिन्न दार्शनिक परंपराओं का अध्ययन और अध्यापन किया जाता था। नालंदा की ख्याति शीघ्र ही भारत की सीमाओं से परे फैल गई। चीन, कोरिया, तिब्बत, मंगोलिया, सुमात्रा, दक्षिण-पूर्व एशिया तथा मध्य एशिया से विद्यार्थी और विद्वान यहाँ शिक्षा एवं शोध के लिए आते थे। चीनी यात्रियों ह्वेनसांग और इत्सिंग के यात्रा-वृत्तांतों से ज्ञात होता है कि अपने उत्कर्ष काल में नालंदा में लगभग 10,000 विद्यार्थी तथा 1,500 से 2,000 के बीच आचार्य और विद्वान निवास करते थे (स्रोत : सिंह, 2020 उधृत : शॉडगंगा, 2023)।

आज विश्वविद्यालय की अवधारणा को प्रायः आधुनिक युग की देन माना जाता है, किंतु नालंदा इस धारणा को चुनौती देता है। यह उस समय एक सुव्यवस्थित, आवासीय और अंतरराष्ट्रीय शिक्षा-केंद्र था, जब यूरोप के प्रसिद्ध विश्वविद्यालय -बोलोन्या (1088 ई.), ऑक्सफोर्ड (लगभग 1096 ई.) और पेरिस (लगभग 1150 ई)-अभी अस्तित्व में भी नहीं आए थे। यही कारण है कि अनेक इतिहासकार नालंदा को विश्व के सबसे प्राचीन, प्रभावशाली और सुव्यवस्थित आवासीय विश्वविद्यालयों में से एक मानते हैं (स्रोत : टाइम्स ऑफ इंडिया, 2024)। नालंदा केवल एक विश्वविद्यालय नहीं ध्यान वह ज्ञान, तर्क, संवाद और वैश्विक सांस्कृतिक आदान-प्रदान का ऐसा केंद्र था जिसने सदियों तक एशिया की बौद्धिक चेतना को दिशा प्रदान की। उसकी विरासत आज भी इस बात की प्रेरणा देती है कि शिक्षा का वास्तविक उद्देश्य केवल जानकारी प्राप्त करना नहीं, बल्कि विवेक, सहिष्णुता और सत्य की खोज को विकसित करना है।

नालंदा की वास्तविक पहचान : भक्ति नहीं, विमर्श

सामान्यतः नालंदा की चर्चा उसके विशाल परिसर, भव्य स्थापत्य और विश्वप्रसिद्ध पुस्तकालय 'धर्मगंज' के संदर्भ में की जाती है। सातवीं शताब्दी में नालंदा आए चीनी यात्री ह्वेनसांग ने इसकी स्थापत्य भव्यता का अत्यंत जीवंत वर्णन किया है। उनके अनुसार नालंदा में अनेक विहार, विशाल मंदिर, विस्तृत अध्ययन-कक्ष, ध्यान-स्थल तथा कमलों से सुशोभित सरोवर थे। एक सातवीं शताब्दी के अभिलेख में नालंदा के विहारों का वर्णन इस प्रकार किया गया है कि उनके ऊँचे शिखर मानो आकाश को स्पर्श कर रहे हों (स्रोत : मिलर, 2019)।

किन्तु नालंदा की वास्तविक महानता उसकी इमारतों, पुस्तकालयों या स्थापत्य वैभव में नहीं थी। उसकी सबसे बड़ी विशेषता थी-विमर्श, शास्त्रार्थ और बौद्धिक बहस की संस्कृति। नालंदा में ज्ञान को केवल श्रद्धा या परंपरा के आधार पर स्वीकार नहीं किया जाता था, उसे तर्क, संवाद और आलोचनात्मक परीक्षण की कसौटी पर परखा जाता था। यहाँ विचारों का सम्मान उनकी लोकप्रियता से नहीं, बल्कि उनकी तार्किक शक्ति से निर्धारित होता था।

नालंदा में प्रवेश प्राप्त करना भी अत्यंत कठिन माना जाता था। मुख्य द्वार पर नियुक्त विद्वान द्वारपाल आने वाले अभ्यर्थियों की मौखिक परीक्षा लेते थे और उनसे दर्शन, तर्कशास्त्र तथा विभिन्न विषयों से संबंधित जटिल प्रश्न पूछे जाते थे। उपलब्ध विवरणों के अनुसार, बड़ी संख्या में अभ्यर्थियों में से केवल कुछ ही इस परीक्षा में सफल हो पाते थे (स्रोत : न्यू इंडियन एक्सप्रेस, 2025)। प्रवेश प्राप्त करने वाले विद्यार्थियों को शिक्षा, भोजन, आवास और चिकित्सा जैसी सभी सुविधाएँ निःशुल्क उपलब्ध कराई जाती थीं। बदले में उनसे अपेक्षा की जाती थी कि वे अध्ययन के साथ-साथ निरंतर बौद्धिक संवाद और शास्त्रार्थ में भाग लें, स्थापित मान्यताओं पर प्रश्न उठाएँ तथा प्रत्येक विचार को तर्क की कसौटी पर परखें।

यही बौद्धिक वातावरण नालंदा को एक साधारण धार्मिक संस्था से अलग करता था। यह केवल बौद्ध धर्म का अध्ययन-केंद्र नहीं था, बल्कि विभिन्न ज्ञान-परंपराओं के मुक्त संवाद का मंच था। यहाँ बौद्ध दर्शन के साथ-साथ वेदान्त, सांख्य, न्याय, व्याकरण, चिकित्सा तथा अन्य दार्शनिक मतों का भी अध्ययन कराया जाता था। यहाँ तक कि लोकायत (चार्वाक) जैसे भौतिकवादी और प्रचलित मान्यताओं को

चुनौती देने वाले दर्शन पर भी विचार-विमर्श होता था। इसका कारण यह था कि नालंदा की दृष्टि में ज्ञान का अर्थ केवल अपने मत की पुष्टि करना नहीं, बल्कि भिन्न और विरोधी विचारों को समझना तथा उनकी आलोचनात्मक समीक्षा करना भी था (स्रोत : सेनगुप्ता, 2024)।

वास्तव में, नालंदा की सबसे बड़ी विरासत उसके भवन या पुस्तकालय नहीं, बल्कि वह बौद्धिक संस्कृति थी जिसमें प्रश्न पूछना प्रोत्साहित किया जाता था, असहमति का सम्मान किया जाता था और सत्य की खोज को किसी भी पूर्वाग्रह से ऊपर रखा जाता था। यही वह आदर्श है जो नालंदा को एक विश्वविद्यालय से आगे बढ़ाकर एक जीवंत बौद्धिक सभ्यता का प्रतीक बनाता है।

पाठ्यक्रम की विविधता : धर्म के साथ विज्ञान का समन्वय

नालंदा महाविहार की सबसे उल्लेखनीय विशेषताओं में से एक उसका व्यापक और बहुआयामी पाठ्यक्रम था। यह केवल धार्मिक शिक्षा का केंद्र नहीं था, बल्कि विभिन्न ज्ञान-विज्ञान विषयों के अध्ययन, अध्यापन और अनुसंधान का भी प्रतिष्ठित संस्थान था। सातवीं शताब्दी के प्रसिद्ध चीनी यात्री ह्वेनसांग के विवरणों के अनुसार, नालंदा में पाँच प्रमुख विद्याओं का अध्ययन कराया जाता था -(1) शब्द विद्या (व्याकरण एवं भाषाशास्त्र), (2) शिल्पस्थान विद्या (कला, गणित, खगोल विज्ञान तथा अन्य व्यावहारिक विद्याएँ), (3) चिकित्सा विद्या (आयुर्वेद एवं चिकित्सा विज्ञान), (4) हेतु विद्या (तर्कशास्त्र एवं युक्तिवाद) तथा (5) आध्यात्मिक विद्या (दर्शन और धर्म) (स्रोत : शांडगंगा, 2023, पृ. 22-25)। इस प्रकार नालंदा का पाठ्यक्रम मानव ज्ञान के लगभग सभी प्रमुख क्षेत्रों को समाहित करता था।

विज्ञान के क्षेत्र में भी नालंदा का योगदान अत्यंत महत्त्वपूर्ण था। परंपरागत मान्यताओं के अनुसार महान गणितज्ञ और खगोलशास्त्री आर्यभट्ट का नालंदा से घनिष्ठ संबंध माना जाता है। उन्होंने गणित और खगोल विज्ञान के क्षेत्र में अनेक क्रांतिकारी सिद्धांत प्रस्तुत किए, जिनमें पृथ्वी के अपनी धुरी पर घूमने की अवधारणा तथा ग्रहणों की वैज्ञानिक व्याख्या विशेष रूप से उल्लेखनीय हैं (स्रोत : न्यूज 18, 2020)। इसी प्रकार वराहमिहिर जैसे विद्वानों के विचारों का प्रभाव भी उस बौद्धिक वातावरण में परिलक्षित होता है, जिसने वैज्ञानिक चिंतन को प्रोत्साहित किया।

चिकित्सा विज्ञान के क्षेत्र में नालंदा में आयुर्वेद, औषधीय वनस्पतियों, शरीर-विज्ञान तथा उपचार-पद्धतियों का व्यवस्थित अध्ययन किया जाता था। उपलब्ध साक्ष्य यह भी संकेत करते हैं कि धातु विज्ञान, कृषि विज्ञान और अन्य व्यावहारिक विषयों पर भी शोध एवं लेखन कार्य होते थे। इससे स्पष्ट होता है कि नालंदा में ज्ञान को किसी एक क्षेत्र तक सीमित नहीं माना जाता था, बल्कि जीवन और प्रकृति से जुड़े प्रत्येक विषय को अध्ययन योग्य समझा जाता था।

नालंदा की सबसे बड़ी विशेषता यह थी कि वहाँ विज्ञान और अध्यात्म को परस्पर विरोधी नहीं माना जाता था। सत्य की खोज दोनों का साझा उद्देश्य था। जहाँ विज्ञान प्रकृति और जगत के नियमों को समझने का प्रयास करता था, वहीं अध्यात्म मानव चेतना और अस्तित्व के गहन प्रश्नों का उत्तर खोजता था। नालंदा की ज्ञान-परंपरा में दोनों धाराएँ एक-दूसरे की पूरक थीं। यही समन्वित दृष्टिकोण उसे अपने समय के अन्य शिक्षा-केंद्रों से विशिष्ट बनाता है।

धर्मगंज : ज्ञान का वह भंडार जिसने युगों को आलोकित किया

नालंदा महाविहार की सबसे अद्भुत उपलब्धियों में उसका विशाल पुस्तकालय था, जिसे 'धर्मगंज' अर्थात 'सत्य और ज्ञान का खजाना' कहा जाता था। यह केवल एक पुस्तकालय नहीं, बल्कि प्राचीन विश्व के सबसे समृद्ध ज्ञान-केंद्रों में से एक था। परंपरागत विवरणों के अनुसार धर्मगंज तीन प्रमुख भवनों-रत्नसागर, रत्नोदधि और रत्नरंजक में विभाजित था। तिब्बती इतिहासकार तारानाथ के वर्णनों से संकेत मिलता है कि यहाँ लाखों पांडुलिपियों का विशाल संग्रह सुरक्षित था (स्रोत : चतुर्वेदी, 2025)।

इनमें सेरत्नोदधि को सबसे महत्वपूर्ण भवन माना जाता है। कहा जाता है कि यह बहुमंजिला संरचना थी, जहाँ दुर्लभ और अत्यंत मूल्यवान ग्रंथों का संरक्षण किया जाता था। ताड़पत्र, भोजपत्र और अन्य पारंपरिक माध्यमों पर लिखी गई इन पांडुलिपियों में दर्शन, व्याकरण, तर्कशास्त्र, आयुर्वेद, गणित, खगोल विज्ञान, धातु विज्ञान, साहित्य, चिकित्सा तथा बौद्ध अध्ययन से संबंधित विपुल ज्ञान संचित था। यह पुस्तकालय

केवल भारतीय विद्या का ही नहीं, बल्कि एशिया के विभिन्न क्षेत्रें से प्राप्त ज्ञान का भी संगम था।

धर्मगंज की महत्ता इस तथ्य से भी स्पष्ट होती है कि नालंदा अनेक महान विद्वानों और चिंतकों की कर्मभूमि रहा। परंपरागत मान्यताओं के अनुसार महान गणितज्ञ एवं खगोलशास्त्री आर्यभट् का नालंदा से घनिष्ठ संबंध माना जाता है। उनके गणितीय और खगोलीय सिद्धांतों ने भारतीय विज्ञान को नई दिशा प्रदान की (स्रोत : न्यूज 18, 2020)। इसी प्रकार महान बौद्ध दार्शनिक नागार्जुन के विचारों ने माध्यमिक दर्शन और शून्यवाद की परंपरा को समृद्ध किया। यद्यपि उनके नालंदा से संबंधों के विषय में विभिन्न मत हैं, फिर भी बौद्ध परंपरा उन्हें नालंदा की बौद्धिक विरासत का महत्वपूर्ण अंग मानती है (स्रोत : तिब्बती बौद्ध विश्वकोश, 2015)।

नालंदा का पतन : केवल एक आक्रमण की कहानी नहीं

नालंदा महाविहार के विनाश का उल्लेख भारतीय इतिहास की सबसे दुखद घटनाओं में किया जाता है। प्रचलित ऐतिहासिक विवरणों के अनुसार, 12वीं शताब्दी के उत्तरार्द्ध में तुर्क सेनापति इख्तियारुद्दीन मुहम्मद बिन बख्तियार खिलजी ने बिहार पर आक्रमण किया, जिसके दौरान नालंदा महाविहार को भी भारी क्षति पहुँची। फारसी इतिहासकार मिनहाज-ए-सिराज ने अपनी प्रसिद्ध तितबकात-ए-नासिरीमें उल्लेख किया है कि इस अभियान के दौरान अनेक बौद्ध भिक्षुओं की हत्या हुई और शिक्षा-केंद्रों को नष्ट कर दिया गया (स्रोत : चतुर्वेदी, 2025)। परंपरागत कथाओं में यह भी वर्णित है कि नालंदा का विशाल पुस्तकालय आग की चपेट में आ गया और वहाँ संरक्षित असंख्य पांडुलिपियाँ नष्ट हो गईं। कुछ विवरणों में पुस्तकालय के लंबे समय तक जलते रहने का उल्लेख मिलता है, यद्यपि इस संबंध में उपलब्ध ऐतिहासिक प्रमाणों पर विद्वानों के बीच मतभेद हैं। किन्तु यह प्रश्न विचारणीय है कि क्या नालंदा जैसी महान संस्था का पतन केवल एक बाहरी आक्रमण का परिणाम था? आधुनिक इतिहासकारों का मानना है कि किसी भी सभ्यता या संस्थान का अवसान सामान्यत: अनेक सामाजिक, राजनीतिक और सांस्कृतिक कारणों के संयुक्त प्रभाव से होता है। नालंदा के संदर्भ में भी यही दृष्टिकोण अधिक संतुलित प्रतीत होता है।

इतिहासकार अभय के. ने अपनी पुस्तक नालंदा : हाउ इट चेंज्ड द वर्ल्ड में नालंदा के पतन के पीछे कार्यरत विभिन्न कारणों का विश्लेषण किया है। उनके अनुसार इसके तात्कालिक कारणों में बख्तियार खिलजी का आक्रमण प्रमुख था। इसके अतिरिक्त, भारतीय धार्मिक और सामाजिक परिदृश्य में हुए परिवर्तनों ने भी नालंदा की स्थिति को प्रभावित किया। मध्यकाल में विभिन्न धार्मिक परंपराओं के पुनर्गठन और बौद्ध धर्म के क्रमिक अवसान के कारण बौद्ध संस्थानों का सामाजिक आधार कमजोर होता गया। साथ ही, जिन राजवंशों ने सदियों तक नालंदा को संरक्षण प्रदान किया था, उनके पतन के साथ राजकीय समर्थन भी धीरे-धीरे कम होता चला गया (स्रोत : न्यू इंडियन एक्सप्रेस, 2025)।

तिब्बत से टोक्यो तक : नालंदा की अमर विरासत

नालंदा महाविहार के पतन के बाद भी उसकी ज्ञान-परंपरा समाप्त नहीं हुई। जब नालंदा और अन्य बौद्ध शिक्षा-केंद्रों पर संकट आया, तब अनेक भिक्षु और विद्वान अपने साथ बहुमूल्य ग्रंथों, पांडुलिपियों और बौद्ध शिक्षाओं को लेकर तिब्बत, नेपाल, भूटान, चीन तथा एशिया के अन्य क्षेत्रों की ओर चले गए। परिणामस्वरूप नालंदा की बौद्धिक विरासत भारत की सीमाओं से बाहर फैलकर एक व्यापक एशियाई ज्ञान-परंपरा का आधार बन गई। विशेष रूप से तिब्बती बौद्ध धर्म पर नालंदा का गहरा प्रभाव दिखाई देता है। माध्यमिक, योगाचार और प्रमाण जैसी प्रमुख दार्शनिक परंपराओं का विकास और संरक्षण नालंदा की विद्वत् परंपरा से घनिष्ठ रूप से जुड़ा रहा। तिब्बती विद्वानों और आचार्यों ने नालंदा के ग्रंथों का अनुवाद किया, उन्हें संरक्षित रखा और आने वाली पीढ़ियों तक पहुँचाया। इसी कारण तिब्बत को नालंदा की बौद्धिक विरासत का महत्वपूर्ण संरक्षक माना जाता है।

नालंदा की इस विरासत को पूर्वी एशिया तक पहुँचाने में चीनी यात्रियों और विद्वानों की भी महत्त्वपूर्ण भूमिका रही। सातवीं शताब्दी में ह्वेनसांग तथा बाद में इत्सिंग जैसे विद्वानों ने नालंदा में अध्ययन किया और यहाँ से अनेक ग्रंथों की प्रतियाँ अपने देश ले गए। इन ग्रंथों के अनुवादों ने चीन, कोरिया और जापान में बौद्ध दर्शन, शिक्षा और सांस्कृतिक विकास को नई दिशा प्रदान की (स्रोत : सेनगुप्ता, 2024)।

इस दृष्टि से देखा जाए तो नालंदा का भौतिक अस्तित्व भले ही नष्ट हो गया हो, किंतु उसकी ज्ञान-ज्योति कभी बुझी नहीं। उसके भवन ध्वस्त हो गए, पुस्तकालय जल गए और शिक्षा-केंद्र समाप्त हो गए, परंतु उसके विचार, उसके ग्रंथ

और उसकी बौद्धिक चेतना एशिया के अनेक देशों में जीवित रही। नालंदा की वास्तविक विरासत उसकी ईंटों और दीवारों में नहीं, बल्कि उस बौद्धिक साहस में निहित है जिसने प्रश्न पूछना सिखाया, तर्क का सम्मान करना सिखाया और ज्ञान को सीमाओं से परे मानवता की साझा धरोहर के रूप में देखने की दृष्टि प्रदान की। इसी अर्थ में कहा जा सकता है कि नालंदा की शाखाएँ भले ही समय के साथ कट गईं, किंतु उसके बीज पूरे एशिया में फैल गए। आज भी वे बीज ज्ञान, संवाद, सहिष्णुता और बौद्धिक स्वतंत्रता के रूप में फल-फूल रहे हैं। यही नालंदा की अमर विरासत है।

नवजागरण : आधुनिक नालंदा विश्वविद्यालय और आज की चुनौतियाँ

इक्कीसवीं सदी में भारत ने नालंदा की गौरवशाली ज्ञान-परंपरा को पुनर्जीवित करने का महत्त्वाकांक्षी प्रयास आरम्भ किया। वर्ष 2007 में फिलीपींस में आयोजित द्वितीय पूर्वी एशिया शिखर सम्मेलन में नालंदा को एक अंतरराष्ट्रीय विश्वविद्यालय के रूप में पुर्नस्थापित करने का प्रस्ताव सामने आया। इसके बाद 2009 में थाईलैंड में आयोजित चतुर्थ पूर्वी एशिया शिखर सम्मेलन में इस पहल को औपचारिक समर्थन प्राप्त हुआ। इस दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम उठाते हुए भारतीय संसद ने वर्ष 2010 में नालंदा विश्वविद्यालय अधिनियम पारित किया, जिसने आधुनिक नालंदा विश्वविद्यालय की स्थापना का मार्ग प्रशस्त किया (स्रोत: विदेश मंत्रालय, भारत सरकार, 2024)। इस ऐतिहासिक परियोजना का एक नया अध्याय 19 जून 2024 को प्रारम्भ हुआ, जब प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी ने राजगीर में नालंदा विश्वविद्यालय के आधुनिक परिसर का उद्घाटन किया। लगभग 455 एकड़ में फैला यह परिसर पर्यावरण-अनुकूल 'नेट-जीरो ग्रीन कैंपस' के रूप में विकसित किया गया है। सौर ऊर्जा आधारित व्यवस्था, विस्तृत जल-संरक्षण तंत्र, हरित क्षेत्र तथा सतत् विकास के सिद्धांत इस परिसर की प्रमुख विशेषताएँ हैं। वर्तमान में यहाँ विभिन्न देशों के विद्यार्थी बौद्ध अध्ययन, ऐतिहासिक अध्ययन, पर्यावरण एवं पारिस्थितिकी, अंतरराष्ट्रीय संबंध तथा अन्य समकालीन विषयों का अध्ययन कर रहे हैं। इस परियोजना में भारत के अतिरिक्त एशिया और विश्व के अनेक देशों का सहयोग भी प्राप्त है, जिससे यह पुन: एक अंतरराष्ट्रीय शैक्षणिक केंद्र के रूप में विकसित हो रहा है।

नालंदा की महानता केवल उसके विशाल परिसर, समृद्ध पुस्तकालय या प्रसिद्ध विद्वानों में नहीं थी। उसकी वास्तविक शक्ति उस बौद्धिक संस्कृति में निहित थी, जहाँ प्रश्न पूछना प्रोत्साहित किया जाता था, तर्क का सम्मान किया जाता था और किसी भी विचार को अंतिम सत्य मानने के बजाय उसकी निरंतर समीक्षा की जाती थी। वहाँ ज्ञान को स्थिर नहीं, बल्कि निरंतर विकसित होने वाली प्रक्रिया के रूप में देखा जाता था। शास्त्रार्थ, विमर्श और आलोचनात्मक चिंतन नालंदा की शिक्षा-पद्धति के मूल आधार थे। आज के समय में जब अनेक विश्वविद्यालय परीक्षा-केंद्रित शिक्षा, रोजगारोन्मुख पाठ्यक्रमों और व्यावसायिक प्रतिस्पर्धा पर अधिाक ध्यान दे रहे हैं, तब नालंदा की विरासत हमें शिक्षा के व्यापक उद्देश्य की याद दिलाती है। शिक्षा का लक्ष्य केवल डिग्री प्राप्त करना नहीं, बल्कि जिज्ञासा, विवेक, सृजनात्मकता और स्वतंत्र चिंतन का विकास करना भी है। इसलिए आधुनिक नालंदा की सफलता का वास्तविक मापदंड उसके भवनों की भव्यता या छात्रों की संख्या नहीं होगी, बल्कि यह होगा कि वह कितनी प्रभावी ढंग से प्रश्न पूछने की संस्कृति, बौद्धिक स्वतंत्रता, संवाद और ज्ञान की निरंतर खोज को प्रोत्साहित कर पाता है। यदि आधुनिक नालंदा इन मूल्यों को पुन: स्थापित कर सका, तो वह केवल एक विश्वविद्यालय नहीं, बल्कि भारत की प्राचीन ज्ञान-परंपरा और वैश्विक बौद्धिक विरासत के पुनर्जागरण का प्रतीक बन जाएगा।

नालंदा की सबसे बड़ी देन : जिज्ञासा, तर्क और प्रश्न करने की कला

नालंदा की सबसे बड़ी विरासत उसके विशाल भवन, भव्य स्तूप या समृद्ध पुस्तकालय नहीं हैं। उसकी वास्तविक शक्ति उस बौद्धिक संस्कृति में निहित थी, जिसने जिज्ञासा, तर्क, संवाद और स्वतंत्र चिंतन को शिक्षा का आधार बनाया। नालंदा हमें यह सिखाता है कि ज्ञान का वास्तविक स्रोत केवल श्रद्धा नहीं, बल्कि प्रश्न पूछने की क्षमता और सत्य की निरंतर खोज है। नालंदा की इस विशिष्ट परंपरा का प्रमाण हमें चीनी यात्रियों ह्वेनसांग और इत्सिंग के यात्र-वृत्तांतों से मिलता है, जो आज भी नालंदा के इतिहास के सबसे महत्त्वपूर्ण स्रोतों में

गिने जाते हैं। इन विद्वानों ने केवल पुस्तकों के अध्ययन के लिए ही नहीं, बल्कि ज्ञान की गहरी प्यास के कारण हजारों किलोमीटर की कठिन यात्राएँ कीं। उनके लिए शिक्षा कोई व्यावसायिक योग्यता या डिग्री प्राप्त करने का साधन नहीं थी, वह आत्मिक और बौद्धिक साधना का मार्ग थी। ज्ञान उनके लिए एक निरंतर यात्रा था, जिसका उद्देश्य सत्य की खोज और समझ का विस्तार था।

आर्यभट्ट भारतीय गणित और खगोल विज्ञान के महानतम विद्वानों में गिने जाते हैं। परंपरागत मान्यताओं के अनुसार उनका नालंदा से घनिष्ठ संबंध था। उन्होंने गणितीय चिंतन को नई दिशा दी और खगोलीय घटनाओं की वैज्ञानिक व्याख्या प्रस्तुत की। पृथ्वी की घूर्णन गति तथा ग्रहणों के वैज्ञानिक विश्लेषण जैसे उनके विचार अपने समय से कहीं आगे थे।

नागार्जुन महायान बौद्ध दर्शन के महान आचार्य और माध्यमिक दर्शन के प्रमुख प्रवर्तक थे। उनके द्वारा प्रतिपादित 'शून्यता' का सिद्धांत केवल धार्मिक चिंतन तक सीमित नहीं था, बल्कि उसने दर्शन, तर्क और ज्ञानमीमांसा के क्षेत्र में भी गहरा प्रभाव छोड़ा। शीलभद्र नालंदा के उन महान आचार्यों में थे, जिनकी विद्वत्ता की ख्याति दूर-दूर तक फैली हुई थी। जब सातवीं शताब्दी में ह्वेनसांग नालंदा पहुँचे, तब शीलभद्र महाविहार के प्रमुख आचार्य थे। ह्वेनसांग ने उन्हें अपने समय का सर्वश्रेष्ठ विद्वान बताया और उनके मार्गदर्शन में अनेक वर्षों तक अध्ययन किया।

इसी प्रकार ह्वेनसांग और इत्सिंग केवल यात्री नहीं थे, बल्कि ज्ञान के सेतु-निर्माता थे। उन्होंने नालंदा में वर्षों तक अध्ययन किया, यहाँ की शिक्षा-पद्धति, पाठ्यक्रम, पुस्तकालयों और विद्वत् परंपरा का विस्तृत विवरण लिखा। आज नालंदा के इतिहास के बारे में जो प्रामाणिक जानकारी उपलब्ध है, उसका बड़ा भाग उनके यात्रा-वृत्तांतों पर आधारित है। चीन लौटते समय ह्वेनसांग अपने साथ अनेक संस्कृत ग्रंथों की प्रतियाँ ले गए और उनका चीनी भाषा में अनुवाद कराया, जिससे भारतीय ज्ञान-परंपरा पूर्वी एशिया तक पहुँची और वहाँ के बौद्धिक विकास को नई दिशा मिली।

नालंदा की विरासत हमें यह सोचने के लिए भी प्रेरित करती है कि शिक्षा का वास्तविक उद्देश्य क्या होना चाहिए। क्या शिक्षा केवल परीक्षाएँ पास करने और रोजगार प्राप्त करने का माधयम है, अथवा वह स्वतंत्र चिंतन, विवेक और सृजनात्मकता के विकास का साधन भी है? आज जब शिक्षा व्यवस्था का बड़ा भाग परीक्षा-केंद्रित और रटने की प्रवृत्ति से प्रभावित दिखाई देता है, तब नालंदा की परंपरा हमें याद दिलाती है कि महान शिक्षा वही है जो प्रश्न पूछने का साहस पैदा करे, तर्क करने की क्षमता विकसित करे और सत्य की खोज को निरंतर जीवित रखे। वास्तव में, नालंदा का सबसे बड़ा उपहार कोई भवन, पुस्तकालय या ऐतिहासिक स्मारक नहीं है। उसका सबसे बड़ा उपहार है-जिज्ञासा की संस्कृति, विचारों की स्वतंत्रता और

नालंदा के महान छात्र : चीनी यात्री ह्वेनसांग
-Source: Google Arts & Culture

नालंदा का इतिहास हमें यह महत्वपूर्ण शिक्षा देता है कि किसी सभ्यता की महानता केवल उसके भव्य मंदिरों, विशाल महलों, शक्तिशाली सेनाओं या आर्थिक समृद्धि से नहीं आँकी जाती। उसकी वास्तविक शक्ति उन ज्ञान-संस्थानों में निहित होती है, जहाँ स्वतंत्र चिंतन को प्रोत्साहन मिले, जिज्ञासा का सम्मान हो और सत्य की खोज को सर्वोच्च मूल्य माना जाए। नालंदा इसी आदर्श का जीवंत प्रतीक था। नालंदा की सबसे बड़ी विरासत उसके विहार, स्तूप, पुस्तकालय या स्थापत्य अवशेष नहीं हैं। उसकी वास्तविक धरोहर वह बौद्धिक संस्कृति है, जिसने ज्ञान को अंधस्वीकार्यता के बजाय जिज्ञासा, तर्क और संवाद के आधार पर विकसित किया। वहाँ प्रश्न पूछना केवल स्वीकार्य ही नहीं था, बल्कि शिक्षा की मूल प्रक्रिया का अभिन्न अंग था। यही कारण है कि नालंदा को केवल एक प्राचीन विश्वविद्यालय के रूप में नहीं, बल्कि मानव सभ्यता के बौद्धिक और शैक्षिक इतिहास के एक महत्वपूर्ण अध्याय के रूप में देखा जाना चाहिए।

निष्कर्ष:

आज, जब हम नालंदा के खंडहरों को संरक्षित करने और उसकी गौरवशाली स्मृतियों को पुनर्जीवित करने का प्रयास कर रहे हैं, तब यह समझना भी आवश्यक है कि किसी संस्थान की आत्मा केवल उसके भवनों में नहीं बसती। यदि हम प्रश्न करने की क्षमता खो दें, यदि असहमति को स्थान न दें, यदि शिक्षा केवल परीक्षाओं और डिग्रियों तक सीमित हो जाए, तो नालंदा का वास्तविक पतन हमारे भीतर ही घटित होगा। दूसरी ओर, यदि हम जिज्ञासा, तर्क, संवाद और स्वतंत्र चिंतन की संस्कृति को जीवित रखें, तो नालंदा की परंपरा आज भी उतनी ही प्रासंगिक और जीवंत बनी रहेगी। सारिपुत्र से लेकर ह्वेनसांग तक, आर्यभट से लेकर ध र्मकीर्ति तक, नालंदा की पूरी परंपरा एक ही संदेश देती है–ज्ञान का प्रकाश प्रश्नों, खोज और निरंतर सीखने की प्रक्रिया से उत्पन्न होता है। यही वह शक्ति है जो समाजों को आगे बढ़ाती है, सभ्यताओं को समृद्ध करती है और मानवता को नई दिशाएँ प्रदान करती है। मूल भावना–ज्ञान के प्रतिनिष्ठा, विचारों के प्रति उदारता और सत्य की खोज के प्रति समर्पण को अपने शैक्षिक संस्थानों, सामाजिक जीवन और व्यक्तिगत चिंतन का हिस्सा बनाएँ। तभी नालंदा वास्तव में पुनर्जीवित होगा और उसकी विरासत आने वाली पीढ़ियों का मार्गदर्शन करती रहेगी।

संदर्भ ग्रन्थ सूची:

1. चतुर्वेदी, म. (2025, दिसम्बर 5). द लॉस्ट लाइब्रेरी ऑफ नालंदा : व्हेन इंडियाज ग्रेटेस्ट विजडम टर्न्ड टू एशेज. इंडिया टुडे. (पाठ्य में : चतुर्वेदी, 2025)
2. मिलर, ए. (2019, जुलाई 18). द धर्म वाज बिल्ट ऑन दीज ब्रिक्स. लायन्स रोअर. (पाठ्य में : मिलर, 2019)
3. ओझा, डी. एन. (2023). नालन्दा के अभिलेखीय साक्ष्यों का अवलोकन. शोध प्रज्ञा, (02), 216–220. उत्तराखण्ड संस्कृत विश्वविद्यालय, हरिद्वार।(पाठ्य में : ओझा, 2023)
4. शॉडगंगा (2023). नालंदा यूनिवर्सिटी : वन ऑफ द ओल्डेस्ट एंड लार्जेस्ट यूनिवर्सिटीज इन एनशिएंट इंडिया (अध्याय 1). आई एन एफ एल आई बी एन ईटी सेंटर, गाँधीनगर। (पाठ्य में) शोधगंगा, 2023)
5. न्यू इंडियन एक्सप्रेस (2025, फरवरी 5). बिफोर ऑक्सफोर्ड एंड हार्वर्ड, देयर वाज नालंदा (अभय के. के साथ साक्षात्कार). न्यू इंडियन एक्सप्रेस. (पाठ्य में : न्यू इंडियन एक्सप्रेस, 2025)
6. टाइम्स ऑफ इंडिया (2024, जून 19). एनशिएंट सेंटर ऑफ लर्निंग इंटरेस्टिंग फैक्ट्स अबाउट, नालंदा यूनिवर्सिटी. टाइम्स ऑफ इंण्डिया. (पाठ्य में) टाइम्स ऑफ इंडिया, 2024)
7. न्यूज 18 (2020, जनवरी 8). एनशिएंट नालंदा टू टुडेज जेएनयू, व्हाई द वॉर ऑन इंडियन आइडेंटिटी इज वेज्ड ऑन इट्स कैंपसेस. न्यूज18. (पाठ्य में : न्यूज18, 2020)
8. सेनगुप्ता, अ. (2024, जून 23). ओपिनियन हिस्ट्री हेडलाइन : द स्टोरी ऑफ नालंदा, इन द वर्ड्स ऑफ चाइनीज पिलग्रिम्स. द इंडियन एक्सप्रेस. (पाठ्य में : सेनगुप्ता, 2024)
9. तिब्बती बौद्ध विश्वकोश (2015, अप्रैल 9). नागार्जुन –प्रविष्टि। (पाठ्य में : तिब्बती बौद्ध विश्वकोश, 2015)
10. टेलर एंड फ्रांसिस (2020, नवम्बर 18). रेलेवेंस ऑफ द नालंदा ट्रेडिशन फॉर कंटेम्परेरी सोसाइटी. (पाठ्य में : टेलर एंड फ्रांसिस, 2020)
11. विदेश मंत्रालय, भारत सरकार (2024, जून 19). प्राइम मिनिस्टर इनॉगुरेट्स द न्यू कैंपस ऑफ नालंदा यूनिवर्सिटी (प्रेस विज्ञप्ति)। (पाठ्य में : विदेश मंत्रालय, 2024)
12. द वीक (2024, जून 19). नालंदा यूनिवर्सिटी इनॉगरेशन 10 थिंग्स टू नो अबाउट आइकोनिक एनशिएंट साइट ऑफ लर्निंग. द वीक. (पाठ्य में : द वीक, 2024)
13. ओयूसीआई (2023). एनशिएंट यूनिवर्सिटी इंस्टीच्यूनल रिपोजिटरीज ए लिटरेचर रिव्यू. इंटरनेशनल जर्नल ऑफ फिलॉसफी एंड लैंग्वेजेज (आईजेपीएल), 115–128. (पाठ्य में : ओयूसीआई, 2023)
14. लायन्स रोअर (2019, जुलाई 18). उपरोक्त स्रोत के अतिरिक्त–सारिपुत्र नालंदा क्षेत्र से संबंधित भाग। (पाठ्य में : लायन्स रोअर, 2019)